[This question paper contains 3 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4163 **A**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. किन्हीं दो सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×2=20)

(क) भूषन-भारु सँभारिहै क्यौं इहिं तन सुकुमार ।

सूधे पाइ न धर परै सोभा हीं के भार ।।

(ख) मैया मैं नहिं माखन खायौ ।

ख्याल परैं ये सखा सबै मिलिं, मेरैं मुख लपटायौ ।

P.T.O.

देखि तुहीं सींकै पर भाजन, ऊँचै धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हे कर अपनै मैं कैसे करि पायौ।

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्ही, देना पीठि दुरायौ।

(ग) जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा,

उनके सखा संगी, विदूषक और दूतों की कथा।

तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे-

होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुल-क्षय है हरे।।

(घ) धर्म का ले-लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद।

हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनन्द।

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।

भिक्षु होकर रहते सम्राट दया दिखलाते घर-घर घूम।।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

सूरदास की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए।

3. घनानंद के कवित्तों का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

बिहारी की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

4. 'रईसों के सपूत' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'हिमालय के आँगन में' कविता का सार लिखिए।

5. 'उनको प्रणाम' कविता की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

'गीतफरोश' की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

6. नागार्जुन **अथवा** जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)